श्री

हनुमानबाहुक स्तोत्र

❀ श्रीमते रामानन्दाय नमः ❀

अथ

हनुमान बाहुक स्तोत्र

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी विरचित ।



उसी को
प्राचीन प्रतियों से मिलाकर पाठ शुद्ध करके, बृहत्मानस शंकामोचन, रामायण शब्द संग्रह तथा श्रीचार-धामयात्रा पाठ के रचयिता, छोटी कुटिया, प्रमोदवन श्रीअयोध्याजी निवासी वैष्णव संत

श्रीबाबा जयरामदास जी

शब्दार्थ तथा गूढ़वाक्यार्थ की टिप्पणी कर के प्रयोग विधि संयुक्त प्रकाशित किये हैं।



तृतीयवार १००० प्रति | सन् १९४४ ई० | मूल्य ।) प्रति

श्रीगणेशाय नमः

प्रथमावृत्ति की



एक समय श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज के बाँहु में हुक कहीं असहनीय पीड़ा उठी। जब श्रीहनुमानजी की स्तुति किये तब कल्याण पाये। उसी स्तोत्र रूप मन्त्र का नाम आप "हनुमान बाहुक" रखे। इसमें छप्पै घनाक्षरी आदि लगाकर सब चौआलिस ४४ कवित्त हैं जो सात्विक वृत्ति से शुद्ध पाठ करने से अमोघ फल देता है।

श्री सीताजी के हरन होने पर उनका पता लगाने के लिए सिन्धु तरन अर्थात् सौ योजन समुद्र पार जाना परम दुस्तर कार्य था। उसको श्री हनुमानजी कौतुक में फान गये व अपने कार्य में अच्छी प्रकार से सफलता पाये। ऐसे कठिन कार्य में कृतकृत्य होते जानकर अपना संकट निवारणार्थ गोस्वामीजी इस ग्रन्थ को "सिन्धु तरन" शब्द से आरम्भ किये हैं।

इस पुस्तक की कै एक आवृत्तियाँ आज तक छप चुकीं पर कुछ न कुछ अशुद्धियाँ रहती चली आईं, जिससे पाठकों को शुद्ध पाठ करने में बाधा पड़ती है। अतः प्राचीन प्रतियों से

मिलाकर व पूज्यपाद श्री १०८ महात्मा श्री रामसुन्दरदासजी रामायनी महानुभाव से दिखलाकर व सम्मति लेकर पाठकों के सुगमता निमित्त शब्दार्थ तथा गूढ़ वाक्यार्थ की टिप्पणी सहित शुद्ध पाठ प्रकाश करके आशा है कि "हनुमान बाहुक" के प्रेमी-जन इसे ग्रहण करके मुझ दीन को कृतार्थ करेंगे।

संतों का सेवक

जयरामदास

ता० २६-८-२६

छोटी कुटिया, प्रमोद वन

श्री अयोध्याजी।

भालापेड़ोवाला

राम मिलन परहार

मन्दिर राजिव लोचन

श्रींगार हाट अयोध्या

फैजाबाद

यु.पी.

श्रीगणेशाय नमः ।

दूसरी आवृत्ति की भूमिका

श्री सज्जन महोदय वृन्द ?

"हनुमानबाहुक स्तोत्र" की प्रथमावृत्ति मुद्रित एक हजार प्रतियाँ हाथो-हाथ बिक बट चुकीं। शब्दार्थ तथा गूढ़ वाक्यार्थ की टिप्पणी संयुक्त पाठ शुद्ध व सबके पढ़ने योग्य अक्षर बड़े होने के कारण प्रेमीजन इसी हनुमान बाहुक को विशेष चाहते हैं।

प्रथमावृत्ति में मुझे परम कृपालु श्री १०८ पूज्यपाद महात्मा रामसुन्दरदासजी रामायणी तथा भक्तमाली महानुभाव से विशेष सहायता मिली रही जो उस आवृत्ति के भूमिका में उल्लेख है। इस आवृत्ति के शुभ अवसर पर आप तथा श्रीअयोध्याजी के प्रसिद्ध रामायणी पूज्यपाद महात्मा श्री १०८ रामबालकदासजी महामहोदय अर्थात् दोउ प्रभु एक सम्मत हो मेरे ऊपर परम अनुग्रह कर आदेश किये हैं कि एपरीवार यह "हनुमान बाहुक" "प्रयोग विधि" संयुक्त छपे। आपके कृपा से पुरानी प्रति हनुमान बाहुक उपरोक्त कार्य के सहायतार्थ देखने को मुझे मिली भी है उसका हाल यह है कि श्री मानस रामायण के तिलककार श्री सीतारामीय हरिहरप्रसादजी के सटीक हनुमान बाहुक से श्री काशीजी के एक भगवत भक्त श्री व्रजचन्द्रजी हनुमान बाहुक के जो ४४ पद हैं उन सबही पर यह नोट करके

कि कौन पद किस अभिप्राय का है, अपने व्रजचन्द्र यन्त्रालय श्री काशीजी में सम्वत् १६४५ में छपाये थे। वह सब अनुष्ठानिक नोट व्रजचन्द्रजी अपनी उक्ति युक्ति से नहीं लिखे हैं वरन् हनुमान बाहुक का रचनाही ग्रन्थकार अनुष्ठानिक किये हैं जो पदों के पढ़ने ही से प्रत्यक्ष विदित होता है। उपरोक्त अभिप्राइक टिप्पणी इस आवृत्ति हनुमान बाहुक में प्रत्येक पद के सिरे पर छपी हुई मिलेगी।

जिला नवाबगंज बारहबंकी वाले नम्बरदार परम भागवत श्री बैजनाथभक्तजी भी हनुमान बाहुक की टीका किये हैं जो सन् १८६३ ई० में लखनऊ मुन्शी नवलकिशोर (सी. आई. ई.) के छापेखाने में छपी। भक्तजी भूमिका में भूतडामरादि तन्त्र ग्रन्थों का आशय लेकर अकड़म चक्र को बनाते हुये मन्त्र क्रिया की कुछ विधि लिखे हैं परन्तु वह शिव पार्वती प्रणीत मन्त्रों के विषय में है जिससे कीले हुये मन्त्रों का उत्कीलन करके संस्कार करना होता है इत्यादि और अनन्त श्री संयुक्त अशेष कविकुल तिलक गोस्वामीजी कृत हनुमान बाहुक उन सब विघ्न बाधाओं से रहित सदा शुद्ध स्वरूप परम साबर है। इसका प्रयोग ही विचित्र है जो आगे लिखता हूँ:—

प्रयोग विधि

है तो प्रत्येक पद भिन्न-भिन्न भावों से भरा परन्तु इस मन्त्र ग्रन्थ का चौवालीसों पद एकत्र एक स्तोत्र माना गया है, अतः अनुष्ठान प्रसंग में यह न करना होगा कि जिसका जो अभिलषित

भाव भरा जो पद है यह केवल उसी एक पद को उठाकर जपना आरम्भ कर दे वरन ऐसा करना होगा कि प्रथम श्री हनुमानजी का षोड़शोपचार पूजन करके सावधान करावे व संकल्प करके अभिप्राय अपना प्रभु को विनयपूर्वक सुनावे, तब निज इच्छित भाव भरा जो पद उसे ग्रहण करे। (वह चाहे किसी नम्बर का पद हो यथा "विगरी वनाइवे निमित्त" घनाक्षरी नं० १५ है) उसको सम्पुट रूप से माने अर्थात् सबसे प्रथम उसको पढ़ कर तब छप्पै नं० १ का पाठ करे पुनः सम्पुट वाला पद पढ़ कर छप्पै नं० २ को पढ़े। इसी प्रकार चौवालिसों पद पढ़ता चला जाय। सम्पुट वाला नम्बर आवे तो उसको भी पाठ रूप से पढ़े। ४४ के बाद भी सम्पुट वाला पद को पढ़े। यह सम्पूर्ण पाठ एक आवृत्ति कहावेगी। अब पाठक के साहस व परिश्रम पर है कि प्रति दिन जितना कर सके। एक बैठक में पाठ चाहे जै आवृत्ति कर सके परन्तु पूजन प्रथमे वाला रहेगा। यदि साँझ सवेर दोनों समय दो-दो आवृत्ति पाठ करे तो एक मास की अवधि रखे। श्री हनुमानजी कृपा करेंगे तो उतने समय में मनोरथ पूर्ण हो जायगा। कलि के कुचाल से शुभ कार्य में विशेष विघ्न बाधा होता है, अतः सिद्धि में प्रायः कहीं भंग कहीं विलम्ब हो जाता है। उसमें घबड़ा कर निरास न होना चाहिये—एक अवधि में कार्य सिद्ध न हो तो दो वा तीन हद चार अवधि तक लगातार चला जाना चाहिये। कार्य अवश्य-अवश्य सुफल होगा। परन्तु अनुष्ठानिक पाठक जन! सावधान रहना कि जितने दिन

तक अनुष्ठान जारी रहे अपना शारीरिक तथा मानसिक आचरण पूर्ण रूप से शुद्ध रखना नहीं तो छिद्र पाकर विघ्न उत्पात करने में प्रवल हो पड़ेगा।

विदित रहे कि अनुष्ठान कठिन कर्म है, वह कठिन अवसर तथा आपत्ति दशा में करना चाहिये। सदा के लिये शुद्ध पाठही परम सुफल है।

लीजिये प्यारे! यही अनुष्ठान विधि है। प्रयोग विधि संयुक्त ऐसा हनुमान बाहुक आज तक आप को अवश्य नहीं मिला होगा। छपाई तो अच्छी हुई है—कागज भी पूर्ववत् उत्तमही रखा गया है व प्रयोगादि की विशेषता की गई है व हनुमत् पंजर नाम का एक मन्त्र भी अन्त में बढ़ा दिया गया है—इतना सब होते हुये भी मूल्य =) दो आना से बढ़ाया नहीं गया—अब भी यदि पुस्तक लेने में विलम्ब करें—समय हाथ से निकल जाय तो आप जानें।

जयरामदास

ता० १-५-३५

छोटी कुटिया, प्रमोद वन.

श्री अयोध्याजी।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्री अञ्जनीकुमारो जयति ।



श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित

हनुमान बाहुक स्तोत्र



यह पद विकट संकट मोचन है:—

१—छप्पै

सिन्धु तरन[1] सिय सोच हरन[2] रवि–वाल[3] वरन तनु ।
भुज विशाल मूरति कराल[4] कालहुं को काल जनु ॥
गहन[5] दहन निरदहन[6] लंक निःशंक वंक[7] भुव[8] ।
जातुधान बलवान मान मद दवन[9] पवन सुव[10] ॥
कहतुलसिदास सेवत सुलभ[11] सेवक हित सन्तत[12] निकट ।
गुन गनत[13] नमत[14] सुमिरत जपत समन[15] सकल संकट विकट[16]

टिप्पणी

१ फानने वाले। २ निवारण करने वाले। ३ बाल रवि अर्थात् प्रभात समय के सूर्य। ४ भयंकर। ५ वाटिका। ६ निःशेष दहन करने वाले। ७ टेढ़ा। ८ भौं। ९ दमन करने वाले। १० पुत्र। ११ सुगम रूप से शीघ्र द्रवते हैं। १२ सदैव। १३ गुणानुवाद कहने से। १४ सरण ही दंड प्रणाम करने से। १५ निवारण। १६ कठिन।

यह पद संताप पाप मोचन है:—

२—छप्पै

स्वर्ण शैल संकास[1] कोटि रवि तरुण तेज घन।
उर विशाल[3] भुजदंड[4] चंड[5] नख[6] वज्र वज्र[7] तन॥
पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस करकंस[10] लंगूर खल दल बल भानन[11]॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुत सुत मूरति विकट[12]॥
संताप[13] पाप तेहि पुरुष कहं सपनेहु नहिं आवत निकट।

१ सुमेरु पर्वत। २ शरीर। कोटि रवि तरुण तेज घन = मध्यान काल के सूर्य तेज से कोटि गुणा अधिक समूह तेज। ३ पुष्ट व चौड़ी। ४ बाहु। ५ प्रचंड। ६ तीक्ष्ण नख। ७ कठोर शरीर। ८ गोरोचन सम पीला। ९ कुछ पीलापन लिये लाल रंग। १० करेर। ११ भंग करने वाले। १२ विकराल। १३ त्रयताप।

यह पद दीन के दुख को दवन कारक है:—

३—झूलना

पंच[1] मुख छमुख[2] भृगुमुख्य[3] भट असुर सुर सर्व

सैरि[४] समर समरत्थ सूरो । वांकुरो[५] वीर विरुदैत[६] विरुदावली[७] वेद वन्दी[८] वदत पैज पूरो[९] ॥ जासु गुनगाथ रघुनाथ कह जासु बल विपुल जल भरित जग जलधि झूँरो[१०] । दीन दुख दवन को कौन तुलसीश[११] है पावन को पूत रजपूत[१२] रूरो[१३] ॥

१ महादेव । २ स्यामकार्तिक । ३ परसुरामजी । ४ बरोबरि । ५ बहादुर । ६ वाना वन्द । ७ सुयश । ८ भांट । ९ प्रतिज्ञापालक । १० सुख्यो । ११ तुलसी के इष्टदेव । १२ परम बलिष्ट छत्रधारी वीर । १३ अति सुन्दर ।

त्रिदेवादि मदमोचनः—

४—घनाक्षरी

भानु सों पढ़न हनुमान गये भानु मन अनुमानि सिसु केलि[१] कियो फेरफार[२] सो ॥ पाछिले पगनि गम गगन मगन मन क्रम[३] को न भ्रम[४] कपि बालक विहार सो । कौतुक विलोकि लोकपाल हरि हर विधि लोचननि चकाचौंधि चित्तनि खभार[६] सो ॥ बल कैधों वीर रस धीरज कै साहस कै तुलसी शरीर धरे सबनि को सार सो ।

१ खेलवाड़ । २ टालटूल । पाछिले पगनि गम = पीछे हटते चलना । ३ पाठक्रम । ४ भूल । कपि बालक विहार सो = जैसे वानर का बच्चा खेलता है । ५ चकमकी । ६ विस्मय ।

यह सुभट मदमोचन पद हैः—

५—घनाक्षरी

भारथ[1] में पारथ[2] के रथ-केतु[3] कपिराज[4] गाज्यो[5] सुनि कुरुराज[6] दल हलबल[7] भो ॥ कह्यो द्रोण[8] भीषम समीर सुत महावीर वीर-रस वारिनिधि जाको बल जल भो । वानर सुभाय बाल केलि[9] भूमिभानु लागि फलँग[10] फलांगहू[11] ते घाटि नभतल[12] भो ॥ नाय नाय माथ जोरि जोरि हाथ जोधा जो हैं हनुमान देखे जग जीवन को फल भो ।

१ भारत के युद्ध में । २ अर्जुन । ३ ध्वजा । ४ हनुमानजी । ५ गर्ज्यो । ६ दुर्योधन । ७ हलचल । ८ द्रोणाचार्य । ९ कुतूहल । १० स्वल्प । ११ तड़पान । १२ आकाश मंडल ।

उजरे हुये जनों को फिर स्थिर बसाइवोः—

६—घनाक्षरी

गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाइ[1] लंक निपट निशंक पर[2]-पुर गलबल[3] भो ॥ द्रोण[4] सो पहार लियो ख्यालही उखारि कर कन्दुक[5] ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो ॥ संकट समाज[6] असमंजस[7] में रामराज[8] काज जुग[9] पूगनि[10] को करतल पल भो ॥

साहसी समर्थ तुलसी को नांह जाकी वांह लोक-पालनि को फिरि फिरि थिरै[11] थलै[12] भो ॥

१ जलाइ । २ शत्रु का नगर (लंकापुरी) । ३ हलचल । ४ द्रोणाचल । ५ गेंद । ६ सम्पूर्ण सेना । ७ चिन्ता । ८ श्रीरघुनाथजी महाराज । ९ सतयुग त्रेता आदि । १० पारलगना । ११ स्थिर । १२ निवास स्थल ।

महाबली होवे को पदः—

७—घनाक्षरी

कमठ[1] की पीठि जाके गोड़नि की गाँड़ै[2] मानो नाप के भाजन भरि जलनिधि जल भो ॥ जातु-धान दावन[3] परावन[4] को दुर्ग[5] भयो महा मीन[6] वास तिमि तोमनि[7] को थल भो ॥ कुम्भकर्न रावन पयो-दनाद[8] ईंधन[9] को तुलसी प्रताप जाको प्रवल अनल[10] भो ॥ भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान सारिखो[11] त्रिकाल न त्रिलोक महाबलभो ॥

१ कच्छप । २ गड़हा । ३ नाश । ४ भगे हुवे । ५ गढ़ । ६ बड़ी मछ-लियों में तीन प्रकार कहा गया है—प्रथम-"तिमि" दुतिय "तिमि" को खाजाने वाली तिमिंगल त्रितिये तिमिंगिल को भी गिल कही निगल जाने वाली तिमिं-गिल गिल,, जो कै एक योजन की लम्बी-चौड़ी होती है—इसी को कहते हैं "महामीन" । ७ समूहन । ८ मेघनाद । ९ लकड़ी । १० अग्नि । ११ समान ।

अज्ञान मोचन पदः—

८—घनाक्षरी

दूत रामराय[1] को सपूत पूत पवन को तु अञ्जनी को नन्दन प्रताप भूरि भान सो ॥ सीय सोच शमन दुरित[2] दोष[3] दमन सरन आये अवन[4] लखन प्रिय प्रान सो ॥ दस मुख दुसह दरिद्[5] दरिबे[6] को भयो प्रगट त्रिलोक ओक[7] तुलसी निधान[8] सो ॥ ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान[9] साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥

१ श्रीरामचन्द्रजी महाराज। २ पाप। ३ दोष=कुलक्षण। ४ रक्षा। ५ दरिद्रता। ६ नाश करने को। ७ त्रिलोक रूपी मन्दिर। ८ परिपूर्ण धन। ९ सचेत।

इच्छित फल प्राप्ति को पदः—

९—घनाक्षरी

दवन[1] दुवन[2] दल भुवन विदित बल वेद जस गावत विबुध[3] बन्दी छोर को ॥ पाप ताप तिमिर[4] तुहिन[5] विघटन[6] पटु[7] सेवक सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥ लोक परलोक ते विशोक सपने न शोक तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ॥ रामको

दुलारो दास बामदेव[9] को निवास नाम कलि-काम-तरु केसरी[10] किशोर को ॥

१ दमन । २ शत्रु । ३ देवता । ४ अन्धकार । ५ पाला । ६ नाश करने वाले । ७ चतुर । ८ शोक रहित । ९ शिवजी । १० केसरी नाम वानर के प्रिय पुत्र ।

सेवक सहायक पदः—

१०—घनाक्षरी

महाबल-सींव महाभीम[1] महावानैत[2] महावीर विदित वरायो[3] रघुवीर को ॥ कुलिश[4] कठोर तन जोरें[5] परै रोरें[6] रन करुना[7] कलित[8] मन धारमिक धीर को ॥ दुर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को सुमिरे हरनहार तुलसी के पीरको ॥ सीय सुखदायक दुलारो रघुनायक को सेवक सहायक है साहसी[9] समीर[10] को ॥

१ अत्यन्त भयंकर । २ तगमाधारी वीर । ३ चुने हुये । ४ वज्र । ५ परिश्रम । ६ करेर । ७ दया । ८ भीजा हुआ । ९ पुरुषार्थी । १० पवनदेव ।

साहिवी प्राप्ति को पदः—

११—घनाक्षरी

रचिवे को विधि जैसे पालिवे को हरि हर मीच

मारिवेको ज्यायवे को सुधा[2]पान भो ॥ धरिवे को धरनि तरनि[4] तम दलिवे को सोखिवे[5] कृशानु पोषि-वे[6]को हिम[7]भान भो ॥ खल दुख दोषिवे[8] को जन परितोषिवे को मांगिवो मलीन[9] ताको मोदक[10] सुदान भो ॥ आरत की आरति[11] निवारिवे[12] को तिहूँपुर तुलसी को साहिब हठीलो हनुमान भो ॥

१ मृत्यु । २ अमृतवत । ३ धारण करिवे को । ४ सूर्य । ५ नाश करिवे को । ६ पोषण भरण करिवे को । ७ चन्द्रमा । ८ नाश करिवे को । ९ रूखा-सूखा । १० आनन्द दायक वस्तु । ११ दुःख । १२ मिटाइवे को ।

त्रैलोक्य संमोहन पदः—

१२—घनाक्षरी

सेवक[1] सेवकाई जानि जानकीश[2] मानै[3] कानि सानुकूल शूलपानि[4] नवै[5] नाथ[6] नाकको ॥ देवी देव दानव दयावने[7] ह्वै जोरै हाथ बापुरे[8] वराक[9] और राजा राना रांक[10] को ॥ जागत सोवत बैठे बागत[11] विनोद[12] मोद[13] ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आंक[14] को ॥ सव दिन रूरो[15] परै पूरो[16] जहां तहां ताहि जाके है भरोसो हिये हनुमान हांक[17] को ॥

१ हनुमानजी । २ जानकी जी के ईश याने स्वामी श्रीरामजी । ३ मर्यादा । ४ शिवजी । ५ प्रणमै । ६ इन्द्र । ७ दयानिमित्त प्रार्थना । ८ अति तुच्छ । ९ गये गुजरे । १० कंगाल । ११ राह चलत । १२ मंगलानन्द । १३ मानसी आनन्द । १४ निश्चय करके । १५ भला । १६ सर्व काज सिद्ध हो । १७ गर्जन ।

वन्दीते छुटिवे को पदः—

१३—घनाक्षरी

सानुंग[1] संगौरि[2] सानुकूल शूलपानि ताहि लोक-पाल सकल लखन राम जानकी ॥ लोक परलोक को विशोक सो त्रिलोक ताहि तुलसी तमाँहि[3] कहि कहां वीर आनकी ॥ केसरी किशोर बन्दीछोरके निवाँजे[4] सब कीरँति[5] विमल कपि करुना निधान की ॥ बालक ज्यौं पालि हैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको जाके हिये हुलसंति[6] हांक हनुमान की ॥

१ अनुग कही सेवक सहित । २ गौरी जी सहित । (तं आहि) उससे को बोल सकता है, क्रोध । ४ बसाये । ५ सुयश । ६ आनन्द देति ।

अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष निमित्त पदः—

१४—घनाक्षरी

करुना निधान[1] बल बुद्धिके निधान मोद महिमा[2] निधान गुन ज्ञानको निधान हौ ॥ वामदेव रूप भूप[3] रामके सनेही[4] नाम लेत देत अर्थ धर्म

काम निरबाँन हौ ॥ आपनो प्रभाव सीता नाथको सुभाव शील लोक वेद विधिहुँ विदुष हनुमान हौ। मन कीं वचन की करम की तिहूँ प्रकार तुलसी तिहारो तुम साहिबं सुजाँन हौ ॥

१ समुद्रवत। २ प्रभाव। ३ राम राजा। ४ परम प्रिय। ५ मोक्ष ६ संकोच। ७ रीति। ८ पंडित। ९ स्वामी। १० अन्तर्यामी।

बिगरी बनाइवे निमित्त पदः—

१५—घनाक्षरी

मनको अगम तन सुगम किये कपीश काज महाराज के समाज साज साजे हैं। देव वन्दी छोर रन रोर केसरी किशोर जुग जुग जग तेरे विरद विराजे हैं ॥ वीर वर जोर घँटि जोर तुलसी की ओरँ सुनि सकुचाँने साधु खल गन गाँजे हैं। विगरी सँवारि अञ्जनी कुमार कीजे मोहि जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं।

मन को अगम = जो विचार में न आवे। तन सुगम किये = शरीर से खेल सरीखे कर दिये। १ श्री रामजी। २ जमात + साज साजे हैं = तैयारी किये हैं। ३ सुयश। ४ कमी। ५ पक्ष में। ६ उदास हुए। ७ प्रसन्न हुए।

अनुभव प्राप्ति निमित्त पदः—

१६—सवैया

जान सिरोमनि हौ हनुमान सदा जन के मन वास तिहारो ॥ ढारो विगारो मैं काको कहां केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥ साहेब सेवक नाते ते हातो कियो तो तहां तुलसी को न चारो ॥ दोष सुनाये ते आगेहुं को हुसियार ह्वैहौं मन तो हिय हारो ॥

जान सिरोमनि = ज्ञानियों में श्रेष्ठ । ढारो बिगारी = गिरा दिया व नष्ट कर दिया है । खीझत = क्रोध करत । हातो = त्यागो । चारो = वस । मन तो हिय हारो = अपराध मान कर हृदय में तो हार माना हूँ ।

उजारिवे को (उच्चाटन):—

१७—सवैया

तेरे थंपे[1] उथंपे[2] न महेश थपे थिर को कपि जे घर घाले[3] । तेरे निवाजे गरीब निवाज विराजत[4] वैरिन के उर शाले ॥ संकट शोच सबै तुलसी लिय नाम फटै मकरी केसे जाले । बूढ़ भये वलि[5] मेरिहि वार[6] कि हारि परे बहुतै नत[7] पाले[8] ॥

१ बसाय । २ उजारे । ३ नाश किये । गरीब निवाज = दीन पालक । ४ विराजमान है । मकरा के से जाले = मकरी के जाल समान । ५ बलिहारी है आपकी । ६ अवसर । हारि परे = थक गये । ७ प्रणत । ८ रक्षा करने में ।

नाश करिये को पदः—

१८—सवैया

सिन्धु तरे बड़े वीर दले खल जारे हैं लंकसे
वंक मवांसे[१] । तैं रनै[२]-केहरि केहरि के विदले[३] अ
कुञ्जर[४] छैल[५] छवांसे[६] । तोसो समर्थ सुसाहिब सेइ स
तुलसी दुख दोष दवांसे[७] । वानर वाज वढ़े खल
खेचर[८] लीजत[९] क्यों न लपेटि लवांसे[१०] ॥

१ गढ़ । २ समर में सिंहवत वीर । ३ मर्दन किये । ४ हस्ती । ५ जवान
६ बच्चा । ७ दावानल । ८ नभचर । ९ लेते हौ । १० वटेर आदि छोटे पक्षी

पाप शाप त्रैताप मोचनः—

१६—सवैया

अच्छ[१] विमर्दन[२] कानन भानि दसानन आनन
भौं[३] न निहारो । वारिदनाद अकम्पन कुम्भकरन्न स
कुंजर केहरि वाँरो[४] ॥ रामप्रताप हुतासन[५] कच्छ
विपँच्छ[६] समीर समीर दुलारो । पापते शापते ताप
तिहूँते सदा तुलसी कहं तो रखवारो ॥

१ अक्षय कुमार । २ मारने हारे । ३ भंजन करने हारे । ४ युवा । ५ अग्नि
तृणपुंज । ६७ शत्रु । ८ देवकोप ।

वांहुपीर निवारण पदः —

२०—घनाक्षरी

जानत जहान जैन[1] हनुमान को निवाज्यौ[2] मन अनुमानि वलि वोलि[3] न विसारिये ॥ सेवा जोग तुलसी कबहूँ कहूँ चूक परी साहेब सुभाव कपि साहेब संभारिये । अपराधी जानि कीजै सांसैति[4] सहस भांति मोदक मरै जो ताहि माहुर[5] न मारिये । साहसी समीर के दुलारे रघुवीर जू के वांहपीर महावीर वेगिही निवारिये ॥

१ तुलसीदास । २ रामजी के शरण करि बड़ाइ दियो । ३ बोलाय शरण में लेकर । सेवा योग तुलसी कबहूँ = क्या तुलसी कबहूँ सेवा योग्य रहा अर्थात् नहीं रहा । कपि साहेब = कपि सिरोमणि । ४ दंड । ५ विष ।

राहु मातुलौ कोऊ दुसह दुर्दशा हो सवका निवारक पदः—

२१—घनाक्षरी

बालक विलोकि बलि वारेते[1] आपनो कियो दीन बन्धु दया कीन्ही निरुपाधि[2] न्यारिये[3] । रावरो भरोसो तुलसी के रावरोई वल आस रावरीऐ दास रावरो विचारिये ॥ बड़ो विकराल कलि काको न विहाल कियो माथे पगु वलीको निहारि सो निर्वा-

रियें । केसरी किशोर रनै-रोर वरजोर वीर वाहुँ पीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥

बालक विलोकि = पुत्रवत दृष्टि से देखि । १ बचपन हीसें । आपनो कियो = शरण लियो । २ धर्म हानि चिन्ता रहित । ३ अतिरिक्त । काको न = किसको नहीं । माथे पगु बलीको निहारि = मेरे ऊपर बलवंत कलिकाल का आक्रमण देखि । ४ बचाइये । ५ संग्राम में कर्कस । ६ सिंहिका ।

मकरी के समान कोऊ दुसह संकट हो सो सबको निवारकः—

२२—घनाक्षरी

उथपे थपन थिर थपे उथपनहार केसरी कुमार बल आपनो संभारिये । रामके गुलामनि कौ काम-तरु रामदूत मोसे दीन दूबरे को तकियाँ तिहारिये ॥ साहेब समर्थ तोसो तुलसी के माथे पर सोऊ अप-राध बिनु वीर बांधि मारिये ॥ पोखरी विशाल वाहूबलि वारिचर पीर मकरी ज्यों पकरि के बदन विदारिये ॥

१ भयसे भगे हुये । २ बसानेवाले । ३ बसे । ४ उजाड़नेवाले । ५ स्मरण कीजिये । ६ कल्पवृक्ष । ७ पुरुषार्थ हीन । ८ भरोसा । समर्थ साहेब = बल प्रताप सम्पन्न स्वामी

लंकिनी के समान महाबाधा निवारकः—

२३—घनाक्षरी

रामको सनेह राम साहस लखन सिय राम

की भगति सोच संकट निवारिये ॥ मुद मरकट रोग वारिनिधि हेरि हारे जीव जामवन्त को भरोसो तेरो भारिये ॥ कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयते[1] सुथल सुबेल[2] भालु[3] बैठिकै विचारिये ॥ महावीर बांकुरे बराकी बाहुँपीर क्यों न लंकिनी ज्यों लात घातही मरोरि[4] मारिये ॥

रामको सनेह राम = मेरे हृदय में जो रामजी का स्नेह है वही श्रीरामजी हैं। साहस लखन = परमार्थ साधन का जो साहस वही श्री लषणलालजी हैं। सीयराम की भगति = मेरे हृदय में जो रामजी की भक्ति है वही श्री सीताजी हैं। मुद मरकट = मानसी आनन्द बन्दर है। रोग वारिनिधि = रोग समुद्र है।

१ पर्वत। २ सुवेल पर्वत। ३ मस्तक। ४ समेटि लपेटि।

महाबाधा को सुगम में निवारिवे को पदः—

२४—घनाक्षरी

लोक परलोकहूं तिलोक[1] न विलोकियत[2] तोसों समरत्थ चख[3] चारिहूं निहारिये[4] ॥ कर्म काल लोकपाल अंग[5] जग[6] जीव जाल[7] नाथ हाथ सब निज महिमा विचारिये ॥ खास दास रावरो निवास तेरो तासु उर तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये ॥

बाहुं तरु मूल बाहुं शूल कपि कछू वेलि उपजी
सँकेलि कपि खेलही उखारिये ॥

१ तिहूंलोक । २ देखियत । ३ नेत्र । ४ विचार कर देखने से । ५ स्थावर । ६ जंगम । ७ समूह । ८ कवाछकी लता । ९ समेटि ।

पूतना सरीखे महा दुष्टा दुर्दशा को नाशक पदः—

२५—घनाक्षरी

करम करोल कंस भूमिपालके भरोसे बँकी वक
भगिनी काहूते कहां डरैगी ॥ बड़ी विकराल बाल
घातिनी न जात कहि बाहुँबल बालक छँबीले छोटे
छँरैगी ॥ आई है बनाय बेर्ष आपहु विचारि देख
पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी ॥ पूतना
पिशाचिनी ज्यों कपि कान्ह तुलसी की बाहु पीर
महाबीर तेरे मारे मैरगी ॥

१ पूर्व संचित कर्म । २ दुष्ट । ३ राजा । ४ बकासूर की बहिन पूतना । ५ बहिन । ६ अति सुन्दर । ७ छल करके मारेगी । ८ स्वरूप । ९ बालक श्री कृष्ण भगवान ।

कर्म काल स्वभाव गुणादि जनित पीर मोचनः—

२६—घनाक्षरी

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की
है वेदन विषम पाप ताप छल छांहँ की ॥ करमन

कूट[६] की कि जंत्र मंत्र बूँट[७] की पराहीं जाँहि[८] पापिनी मलीनं[९] मन मांहकी ॥ पाँय[१०] है सजाय नत कहत बजाँय[११] तोहिं बाँवरी[१२] न होहि बाँनि[१३] जानि कपि नांहकी ॥ आँन[१४] हनुमानकी दोहाँई[१५] बलवान की शपथ महाबीर की जो रहै पीर बांह की ॥

१ कलिकाल। २ प्रेतादिक क्रोध। ३ कठिन। ४ ज्वाला। ५ छाया। ६ ढेर। ७ बूटी। ८ भागिजा। ९ हिंसा वासना वाली। १० पावेगी। ११ प्रचार। १२ उनमद। १३ रीति। १४ शपथ तथा अमर्ष। १५ शपथ तथा फिरियाद सम्बोधन।

सकोची कर्म में भी निःशंकता और शीघ्रता को पदः—

२७—घनाक्षरी

सिंहिका[१] संघारि बली सुरसा[२] सुधारि[३] छलि लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है। लंकपुर जारि मकरी विदारि वार वार जातुधान धाँरि धुरिधानी[६] करि डारी है ॥ तोरि जमकातरि मन्दोदरि कढोरि आनी रावन की रानी मेघनाद महतारी है ॥ भीर बांह पीर की निपट राखी महाबीर कौन के सकोच तुलसी के सोच भरी है ॥

१ समुद्र में छाया गहने वाली एक राक्षसी रही। २ सर्पों की माता जो

समुद्र फानते में महावीरजी का मार्ग रोके रही। ३ शान्तकरि। ४ राक्षसी रही। ५ सेना। ६ मीजि मर्दि। ७ कीवांड़। ८ घसीटकर बाहर काढ़ लायी। ९ तुच्छ।

देव ग्रह जनित उपाधि के उबारिवे को पदः—

२८—घनाक्षरी

तेरी बाल केलि वीर सुनि सहमत[1] धीर भूलत शरीर सुधि शंक्र[2] रवि राहु की ॥ तेरी बांह वसत विशोक लोकपाल सब तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी ॥ साम[3] दाम[4] भेद[5] विधि वेदहुँ लेवेद[6] सिधि हाँथ कपि नाथही के चोटी[7] चोर[8] साहु[9] की ॥ आलस अनख[11] परिहास कि सिखावन है एते दिन रही पीर तुलसी के बांहु की।

कंपत। २ इन्द्र। ३ परस्पर मेल। ४ कुछ देकर मेल करना। ५ बंधु सेवक आदि को फोर कर मिला लेना। ६ दंड। ७ आधीन। ८ सिखा। ९ वेद विमुख। १० वेद मार्ग पर चलने वाला। ११ क्रोध।

सासति में परिहांस निवारिवे को पदः—

२९—घनाक्षरी

टूकनि को घर घर डोलत[2] कंगाल बोलि[3] बाल ज्यों कृपाल नत पाल पालि पोसो है ॥ कीन्ही है सम्हार सार[4] अञ्जनी कुमार वीर आपनो विसारि है न मेरेहूँ भरोसो है ॥ एतनो परेखो सब भांति सम-

रथ आजु कपिनाथ सांची कहौ को त्रिलोक तो सो है ॥ सासति सहत दास कीजै पेखि[5] परिहास चिरी[6] को मरन खेल वालकनि को सोहै ॥

१ भोजन। २ फिरत। ३ बोलाकर। ४ मुख्य। ५ देखि। ६ चिड़िया का बच्चा।

निज दास के कार्य्य में ढिलाइ न हो हे प्रभो !:--

३०--घनाक्षरी

आपने ही पाप तें त्रितापतें कि शाप तें बढी है वांह वेदन[1] कही न सहिजाति है ॥ औषध अनेक जंत्र[2] मंत्र टोटकादि किये वादि[3] भये देवता मनाये अधिकाति है ॥ करतार[4] भरतार[5] हरतार[6] कर्म काल को है जग जाल जो न मानत इताति[7] है ॥ चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कहो रामदूत ढील[8] तेरी वीर मोहिं पीरते पिराति है ॥

१ पीडा। २ तन्त्र। ३ निष्फल। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु। ६ महेश। ७ आज्ञा। ८ आलस्य। पीरते पिरात है = बांहु वेदन से भी अधिक पीड़ा देता है।

श्री हनुमानजी के प्रभाव को प्रगट करिवे को पदः—

३१ —घनाक्षरी

दूत राम राय[1] को सपूत पूत वाय[2] को समर्थ हाथ[3] पाय को सहाय असहाय को ॥ बांकी बिरदा

बली विदित बेद गाइयत[४] रावन सो भट[५] भयो मुठिका[६] के घाँय को ॥ एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आजु सीदत सुसेवक बचन मन काय[७] को ॥ थोरी बांहु पीर की बड़ी ग्लानि तुलसी को कौन पाप कोप[१०] लोप[११] प्रगट[१२] प्रभाय को ॥

१ महाराज । २ पवन । ३ समर्थ भुजावाले । ४ बखानत । ५ महाबली । ६ मुष्टिका । ७ चोट । ८ कष्ट सहत । ९ तन । १० कुप्रभाव । ११ छिपजाना । १२ प्रसिद्ध ।

चराचर को दुष्टता निवारिवे को पदः—

३२—घनाक्षरी

देवी देव दनुज[१] मनुज मुनि सिद्ध नाग छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ॥ पूतना[२] पिशाची[३] जातुधानी जातुधान वाँम[४] रामदूत की रजाइ[५] माथे मानि लेत हैं ॥ घोर जंत्र मंत्र कूट[६] कपट कुजोग रोग हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत[७] हैं ॥ क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को सोध[८] कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥

१ दानव । २ बालग्रह । ३ मांस खानेवाली योगिनी । ४ प्रतिकूल । ५ आज्ञा । ६ जादू टोना । ७ स्थान । ८ संसोधन ।

श्री हनुमानजी को पूर्ण सावधान करिवे को पदः—

३३—घनाक्षरी

तेरे बल वानर जिताये[1] रन रावन सों तेरे घाले जातुधान भये[2] घर घर[3] के ॥ तेरे बल रामराज किये सब सुर काज सकल समाज साज साँजे[4] रघुवर के ॥ तेरे गुनगान सुनि गिरवाँन[5] पुलकत सजल विलोचन विरंचि हरि हर के ॥ तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीशनाथ बूझिये[6] न दास दुखी तोसे कनिगँर[7] के ॥

१ मारे। २ कम्पित भये। ३ सम्पूर्णलंका। ४ सुधार दिये। ५ देवता। माथे पर हाथ फेरो = कल्याण करो। ६ चाहिये। ७ समर्थ प्रतिष्ठित।

अपने को सर्वोपाय सून्य कहकर कार्यमे विलम्ब निवारिवे को पदः—

३४—घनाक्षरी

पाल्यो तेरे टूक[1] को परहू चूक मूकिये[2] न कूर[3] कौड़ी दूको हौं आपनि ओर हेरिये[4] ॥ भोरानाथ[5] भोरे[6] हैं सरोष होत थोरे दोष पोषि[8] तोषि[9] थापि आपनो न अवडेरिये[11] ॥ अम्बु[12] तू हौं अम्बूचर[13] अम्ब[14] तू हौं डिम्भ[15] सो न बूझिये विलम्ब अवलम्ब मेरे

तेरिये ॥ बालक विकल जानि पाँहि[16] प्रेम पहिचानि तुलसी के बांह पर लांबी[17] लूम फेरिये ॥

१ टुकड़ा । २ त्यागिये । ३ टेढ़ी प्रकृतिवाला । ४ विचारिये । ५ भोलानाथ ६ बौरहे । ७ क्रोध । ८ पालन करि । ९ संतुष्ट करि । १० आपनो करि ११ अनादरिये । १२ जल । १३ जलचर । १४ माता । १५ बच्चा । १६ पालन कर । १७ विशाल लंगूर ।

कुरोग राड़ राकसनि के निवारिबे को पदः—

३५—घनाक्षरी

घेरि लियो रोगनि[1] कुलोगनि[2] कुजोगनि[3] ज्यों बासर[4] सजल[5] घन घटा धुंकि[6] धाई है ॥ बरषत बारि पीर जारिये जवासे ज्यों सरोष बिनु दोष धूम मूल मलिनाई है ॥ करुना निधान हनुमान महा बलवान हेरि हंसि हाँकि फूंकि फौजैं ते उड़ाई है ॥ खायहुते तुलसी कुरोग राँड़ राकसनि केसरी किशोर राखे बीर बरियाई है ॥

१ अनेक प्रकार का रोग । २ बाधा करनेवाले दुष्ट लोग । ३ विषम स्थान की ग्रहदशा । ४ दिन । ५ जलपूर्ण । ६ चपलता से । ७ व्यथा रूपी जल । ८ हिंगुआ । ९ विकार । १० गर्जि । ११ दुष्ट ।

दर्बार मे लटकर परो रहनो कहकर कृपा करावनोः—

३६—सवैया

राम गुलाम[1] तुहीं हनुमान गुसाँई[2] सुसाँई[3] सदा

अनुकूलो[४] ॥ पाल्यौ हौं बाल ज्यों आखर[५] दु पितु मातु ज्यों मंगल मोद समूलो ॥ बांह की वेदन बांह पगार[६] पुकारत आरत आनन्द भूलो ॥ श्री रघुवीर निवारिये पीर रहौं दरवार परो लटि[७] लूलो[८] ॥

१ सेवक। २ इन्द्रियों के स्वामी। ३ सुन्दर स्वामी। ४ हितकर। ५ अक्षर। ६ मजबूत बाँहवाले। ७ दुर्बल। ८ लोलुप।

भूतनि की आपनी व पराई रीति कहि कृपा करावनोः—

३७—घनाक्षरी

काल[१] की करालता[२] करम[३] कठिनाई किधौं[४] पाप के प्रभाव की सुभाय वाय वावरे[५] ॥ वेदन कुभांति सो सही न जाति राति दिन सोई बांह गही जो गही समीर डावरे[६] ॥ लायो तरु तुलसी[७] तिहारो सो निहारि वारि सींचिये मलीन[८] भो तयो है तिहुं तावरे ॥ भूतन कि आपनी पराई है कृपा निधान जानियत सबही की रीति राम रावरे[९] ॥

१ कलिकाल। २ क्रूरता। ३ पूर्व कुटिल कर्म के कठिन भोग। ४ अथवा। ५ बह रही है। ६ पुत्र। ७ तुलसीदास रूप वृक्ष। ८ मुर्झायो। ९ आप।

सर्वाङ्ग पीर तथा देव भूत ग्रहादि निवारण पदः—

३८—घनाक्षरी

पांय पीर पेट पीर बांह पीर मुख पीर जरजर

सकल शरीर पीरमई है ॥ देव भूत पितर करम खल, काल ग्रह मोहि पर दवरि[२] दमानक[३] सी दई है ॥ हौं तो बिनु मोलही बिकानो बलि बारेही ते ओट[४] राम नाम की ललाट लिखि लई है ॥ कुम्भज[५] के किंकर विकल बूडे गोखुरनि[६] हाय रामराय ऐसी हाल कहूं भई है ॥

१ दुर्बल । २ धावाकरि । ३ पिस्तौल । ४ अवलम्ब । ५ अगस्त जी । ६ गौ का खुर ।

रामनाम जप जाग (यज्ञ) में विघ्न निवारण:—

३९—घनाक्षरी

बाहुक[१] सुबाहु[२] नीच लीचर[३] मरीच[४] मिलि मुंह पीर केतुजा[५] कुरोग जातुधान[६] हैं ॥ राम नाम जप जाग कियो चाहो सानुराग काल कैसे दूत[७] भूत कहां मेरो मान हैं ॥ सुमिरे सहाय राम लखन आखर दोऊ जिन्ह के समूह साके[८] जागत जहान हैं ॥ तुलसी संभारि ताड़िका संघारि भारी भट वेधे वरगंद[१०] से वनाइवान[११] बान हैं ।

१ बाहुंपीर । २ राक्षस रहा । ३ कीचर । ४ मारीच राक्षस । ५ ताड़का । ६ दानव । ७ प्रेत । कहां मेरे मान है = मेरे हटाये नहीं हट सकते । ८ यश

ताप । ९ प्रसिद्ध । १० वट वृक्ष के पके फल । ११ वन वन अर्थात् प्रत्येक अंग । १२ सर । बींधे बान बान है = प्रत्येक अंग को बानन से वेधे ।

भोरे दिन भूल जायवे को अपराध क्षमा कराइवोः—

४०—घनाक्षरी

बालपने सुधे मन राम सन्मुख भयो रामनाम लेत मांगि खात टूक टाक हौं ॥ पस्यो लोकै रीतिमे पुनीत प्रीति राम राय मोह बस बैठों तोरि तरकि तराक हौं ॥ खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो अंजनीकुमार सोध्यौ राम पानि पाक हौं ॥ तुलसी गोसाईं भयो भोरे दिन भूलि गयो ताको फल पावत निदान परिपांक हौं ॥

१ प्रपंच रहित शुद्ध । २ मधूकरि । ३ संसारिक व्यवहार । ४ शुद्ध प्रेम । ५ अनुमान करि । ६ शीघ्रही । बैठों तोरि तराक हौं = भगवत प्रेम को उलंघन करि शीघ्र ही प्रभु सौ विमुख हो बैठ गयो । खोटे खोटे आचरण = कपट व्यवहार । ७ करत । ८ शुद्ध कियो । राम पानि पाक हौं = रघुनाथ जी के कर-कमल द्वारा पवित्र हुये । ९ निकम्मे । १० पूर्ण परिपक्व ।

प्रभु को गुण व आपनो दोष समझि अपराध क्षमा कराइवोः—

४१—घनाक्षरी

असन बसन हीन विषम विषाद लीन देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ॥ तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो दियो फल शील सिन्धु आपने

सुभाय को ॥ नीच[5] यहि बीच पति[6] पाइ मरुहाइँगो[7] बिहाय प्रभु भजन वचन मन काय को ॥ ताते तन पेखियत घोर बरतोर मिसि[9] फूटि फूटि[10] निकसत लोन राम रायको ॥

१ भोजन। विषम विषाद लीन = महा दुःख में परा। २ पौरुष हीन। ३ अफसोस करना। ४ मान बड़ाई। ५ अधम। ६ मर्याद। ७ बउराइगो। ८ फोरिया। ९ बहाना। १० अंग फोर फोर कर।

सर्वोपाय शून्य शरणागत को श्री रामजी में रक्षा की पूर्ण प्रतीति कराइबो।

४२—घनाक्षरी

जीवों जग जानकी जीवन को कहाइजन मरिवेको वारानसी[1] वारि[2] सुरसरिको[3] ॥ तुलसी के दुहुँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँय[4] जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको[5] ॥ मोको झूठो सांचो लोग राम को कहत सब मेरे मन मान[6] है न हर को न हरि को ॥ भारी पीर दुसह शरीर ते विहाल होत सोऊ रघुवीर बिनु सकै दूरि करि को ॥

१ काशीजी। २ जल। ३ गंगाजी। ४ काशीजी में। ५ अबोध। ६ सनमान। ७ विकल।

भक्ति भक्त भगवंत गुरु चारो एकै तन जानि तिनकी प्रसन्नता कराइवे को पदः—

४३—घनाक्षरी

सीतापति साहेव सहाय[1] हनुमान नित हित[2] उपदेश को महेश मानो गुरुकै ॥ मानस वचन काय सरन तिहारे पाय तुम्हारे भरोसो सुर[3] मैन जाने सुर[4] कै ॥ व्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की समाधि[5] कीजै तुलसी को जानि जन फुर[6] कै ॥ कपिनाथ रघुनाथ भोरानाथ भूतनाथ रोग सिन्धु क्यों न डारियत[7] गाय खुर कै ॥

१ रक्षक । २ कल्याण कारक । ३ हे देव । ४ देवता । ५ निरुज कर मन स्थिर कर दीजैं । ६ सत्य । ७ कर देते हैं ।

इन चारों में अकारण करणादि सम्पूर्ण को साहेव श्री रामजी को निर्धारि पढ़त ही वांछित फल मिलने का प्रार्थनाः—

४४—घनाक्षरी

कहौं हनुमान सों सुजान राम राय सों कृपा निधान शंकर सों सावधान[1] सुनिये ॥ हरष[2] विषाद[3] राग[4] रोष[5] गुन[6] दोष[7] मयी[8] विरचि विरंचि सब देखियत दुनिये[9] ॥ माया[10] जीव[11] कालके करमके सुभायके

करैया राम वेद कहैं सांची मन गुनिये ॥ तुमं
कहान होइ हा हा सो बुझैये मोहि हौंहूँ रहौं मौं
ही वयो सो जानि लुनिये ॥

१ मन देकर । २ सुख । ३ दुःख । ४ प्रेम । ५ विरोध । ६ जिस
प्रशंसा ही । ७ जिसका निन्दा ही । ८ मिश्रित । ९ संसार । १० जीव
भोरने वाली । ११ जिसको माया भुलादे ।

इति श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी विरचित
हनुमान बाहुक स्तोत्र समाप्त

हनुमान मन्त्र स्तोत्र ।

ॐ नमो भगवते विचित्रवीरहनुमते प्रलयकालानलप्रभाप्रज्वलनाय; प्रतापवज्रदेहाय; अंजनीगर्भसंभूताय; प्रगटविक्रमवीरदैत्यदानवयक्ष-रक्षोगणग्रहबंधनाय; भूतग्रहबंधनाय; प्रेतग्रहबंधनाय; पिशाचग्रह-बंधनाय; शाकिनीडाकिनीग्रहबंधनाय; काकिनीकामिनीग्रहबंधनाय; ब्रह्मग्रहबंधनाय; ब्रह्मराक्षसग्रहबंधनाय; चोरग्रहबंधनाय; मारीग्रह-बंधनाय; एहि एहि; आगच्छ आगच्छ; आवेशय आवेशय; मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय; स्फुर स्फुर; प्रस्फुर प्रस्फुर; सत्यं कथय; व्याघ्रमुखबंधन; सर्पमुखबंधन; राजमुखबंधन; नारीमुखबंधन; सभा मुखबंधन; शत्रुमुखबंधन; सर्वमुखबंधन; लंकाप्रासादभंजन; अमुकं मे वशमानय; क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं राजानं वशमानय; श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रि आकर्षय आकर्षय; शत्रून् मर्दय मर्दय; मारय मारय; चूर्णय चूर्णय; खे खे श्रीरामचन्द्राज्ञया मम कार्यसिद्धिं कुरु कुरु; ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा; विचित्रवीर हनुमन्; मम सर्वशत्रून् भस्म कुरु कुरु; हन हन हुँ फट् स्वाहा ।

(स्तोत्ररत्नाकरे)

अथ हनुमत्पंजरमन्त्रम्

ॐ हनुमते नमः ॐ महावीर हनुमन्ता, ॐ कालाटंक हनुमन्ता, ॐ रक्तहनुमन्ता, ॐ चल चल अञ्जनी पुत्र ग्रह चल हांक दे हंकी कूदि हनुमन्त लंक जारी पवन पुत्र अञ्जनी आनन्द कारी रामदूत हनुमन्त खं खं खं षट् ग्रह हं हं हंकार भाज भाजि शाकिनी डाकिनी, भूत प्रेत पिशाच वंध, वंधवीर हनुमन्त ढाल वन्ध तलवार वन्ध तोपक वन्ध नेजा वन्ध फरसा वन्ध वान वन्ध कोहक वा वन्ध चन्डवाण वन्ध रथवन्ध पृथ्वी वन्ध आकाश वन्ध पाताल वन्ध फौज वन्ध कंकर वन्ध पत्थर वन्ध अग्नि वन्ध वीर हनुमन्त वांधो तो माता अञ्जनी की दोहाई। गुरु शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच—

जयरामदास
छोटी कुटिया
प्रमोदवन
श्री अयोध्याजी

बिगड़ी बनाने वाले बिगड़ी बनादे
नैया हमारी पार लगादे।
इधर भी कोर उधर भी कोर
चाहे तू काँटों को कलीया बनादे।
बीच भमर में फसी मेरी नैया तू चाहे नैया को
पार लगादे।

Games Parsad

Games Parsad P.T. Ma[illegible]

Sri Games Parsad P.T. Master

G.N. ~~[illegible]~~ Skhaul Kawri

Banda

Games Parsad P.T. (U.P.) Master

Raghu Nandan Parsad Sa[illegible]

दया कर दया कर दया करने वाले।
कृपा कर कृपा कर कृपा करने वा
दया कर दया कर दया करने वाले।
कृपा कर कृपाकर कृपाकरने वा

बिगड़ी बनाने वाले बिगड़ी बनादे नैया [illegible]
पार लगादे। नैया हमारी पार लगादे।
इधर भी है और उधर भी है और-
चाहे तू कोई को [illegible]
[illegible]
नैया
तू चाहे नैया को पा[illegible]